जिस्म की जरूरत-2

“उनके मुड़ते ही मेरी आँखें अब सीधे वहाँ चली गईं
जहाँ लड़कों की निगाहें अपने आप चली जाती हैं…
जी हाँ, मेरी आँखें अचानक ही उनके मटकते हुए
कूल्हों पर... [Continue Reading] ...”

Story By: sameer chaudhary (sameer_chaudhary)
Posted: Sunday, October 12th, 2014
Categories: पड़ोसी
Online version: जिस्म की जरूरत-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

जिस्म की जरूरत-2

उनके मुड़ते ही मेरी आँखें अब सीधे वहाँ चली गईं जहाँ लड़कों की निगाहें अपने आप चली जाती हैं… जी हाँ, मेरी आँखें अचानक ही उनके मटकते हुए कूल्हों पर चली गईं और मेरे बदन में एक झुरझुरी सी फ़ैल गई।

उनके मस्त मटकते कूल्हे और उन कूल्हों के नीचे उनकी जानदार गोल गोल पिछवाड़े ने मुझे मंत्रमुग्ध सा कर दिया।

मैं दो पल दरवाज़े पे खड़ा उनके घर की तरफ देखता रहा और फिर एक कमीनी मुस्कान लिए अपने घर में घुस गया।

घड़ी की तरफ देखा तो घड़ी की सुइयाँ धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़ रही थीं और मेरे दिल की धड़कनों को भी उसी तरह बढ़ा रही थीं।

एक अजीब सी हालत थी मेरी, उस हसीं भाभी से दुबारा मिलने का उत्साह और पहली बार उनके घर के लोगों से मिलने की हिचकिचाहट।

वैसे मैं बचपन से ही बहुत खुले विचारों का रहा हूँ और जल्दी ही किसी से भी घुल-मिल जाता हूँ।

खैर, दिल में कुछ उलझन और कुछ उत्साह लिए मैं तैयार होकर उनके दरवाज़े पहुँचा और धड़कते दिल के साथ उनके दरवाज़े की घण्टी बजाई।

अन्दर से किसी के क़दमों की आहट सुनाई दी और उस आहट ने मेरी धड़कनें और भी बढ़ा दी।

दरवाज़ा खुला और मुझे एक और झटका लगा, सामने एक खूबसूरत सा चेहरा एक कातिल सी मुस्कान लिए खड़ा था।
सफ़ेद शलवार और कमीज़ में लगभग 18 साल की एक बला की खूबसूरत लड़की ने मुस्कुराते हुए मुझे नमस्ते की और अन्दर आने का निमंत्रण दिया।

मैं बेवकूफ़ की तरह उसके चेहरे की तरफ देखता रहा और कुछ बोलना ही भूल गया…

'अन्दर आ जाइये…' अन्दर से वही आवाज़ सुनाई दी यानि कि उस महिला की जो अभी थोड़ी देर पहले मेरे घर पर मुझे खाने का निमंत्रण देने आईं थीं।

उनकी आवाज़ ने मेरा ध्यान तोड़ा और मैं भी बड़े शालीनता से उस हसीन लड़की की तरफ देखते हुए नमस्ते कहते हुए अन्दर घुस पड़ा।

घर के अन्दर आया तो एक भीनी खुशबू ने मुझे मदहोश कर दिया जो शायद उस कमरे में किये गए रूम फ्रेशनर की थी।
वो एक बड़ा सा हॉल था जिसमें सारी चीज़ें बड़े ही तरीके से सजाकर रखी गईं थीं।

सामने सोफे लगे हुए थे और उस पर एक तरफ एक सज्जन करीब करीब 50-55 साल के बैठे हुए थे।

मैंने आगे बढ़ कर उन्हें नमस्ते किया और एक सोफे पर बैठ गया।

तभी भाभी भी उस लड़की के साथ आकर सामने के सोफे पर मुस्कुराते हुए बैठ गईं।

अब हमारी बातों का सिलसिला चल पड़ा और हमने एक दूसरे से अपना अपना परिचय करवाया।

बातों बातों में पता चला कि वो बस तीन लोगों का परिवार है जिसमें उस परिवार के मुखिया

अरविन्द झा जी एक सरकारी महकमे में सीनियर इंजिनियर हैं और पास के ही एक शहर पूर्णिया में पदस्थापित हैं। उनकी पत्नी रेणुका जी एक सरकारी स्कूल में शिक्षिका हैंऔर उनकी इकलौती संतान यानि उनकी बेटी वन्दना बारहवीं में पढ़ रही थी।

थोड़ी देर में ही हम काफी घुल-मिल गए और फिर खाने के लिए बैठ गए।

खाने के मेज पर मैं और अरविन्द जी एक तरफ और रेणुका तथा वन्दना सामने की तरफ बैठ गए।

अरविन्द जी भी बड़े ही खुले विचारों के लगे और मुझसे बिल्कुल ऐसे बात कर रहे थे जैसे कई सालों से हमारी जान पहचान हो।

मैं भी उनसे बातें करता रहा लेकिन निगाहें तो सामने बैठी दो दो कातिल हसीनाओं की तरफ खिंची चली जाती थी... उन दोनों के चेहरे से टपकते नूर ने धीरे धीरे मेरे ऊपर एक नशा सा छ दिया था, मैं चाहकर भी उनके चेहरे से नज़रें हटा नहीं पा रहा था।

और फिर मेरी निगाहों ने अपनी असलियत दिखाई और चेहरे से थोड़ा नीचे की तरफ सरकना शुरू किया... रेणुका जी ने वही चमकदार हरे रंग की साड़ी अब भी पहन रखी थी और इतनी शालीनता से पहनी थी कि उनके गले के अलावा नीचे और कुछ भी नहीं दिख रहा था, लेकिन उनकी साड़ी ने इतना उभर बना रखा था कि एक तजुर्बेदार इंसान इतना तो समझ सकता था कि उन उभारों के पीछे अच्छी खासी ऊँचाइयाँ छिपी हुई हैं।

उनकी रेशमी त्वचा से भरे हुए गले ने यह एहसास दिला दिया था कि उनका पूरा बदन यूँ ही रेशमी और बेदाग ही होगा।

दूसरी तरफ वन्दना अपने सफ़ेद शलवार कमीज़ में अलग ही क़यामत ढा रही थी।
उसने भी अपनी माँ की तरह अपने बाल खुले रखे थे जो पंखे की हवा में लहरा रहे थे और

बार बार उसके चेहरे पे आ जाते थे, जिन्हें हटाते हुए वो और भी खूबसूरत लगने लगती थी।

गहरे गले की कमीज़ उसके गोल गोल चूचियों की लकीरों की हल्की सी झलक दे रही थीं जो एक जवान लड़के को विचलित करने के लिए काफी होती हैं।

वैसे उसने दुपट्टा तो ले रखा था लेकिन अलग तरीके से यानि दुपट्टे को मफलर की तरह अपने गले में यूँ लपेट रखा था कि उसका एक सिरा गले से लिपटते हुए पीछे की ओर था और दूसरा सिरा आगे की तरफ उसकी दाहिनी चूची के ऊपर से सामने लटक रहा था।

यानि कुल मिला कर उसकी 32 साइज़ की चूचियाँ अपनी गोलाइयों और कड़ेपन का पूरा एहसास दिला रही थीं।

चूचियों की झलक और उसकी लकीरें दिल्ली में आम बात थीं… वहाँ तो न चाहते हुए भी आपको ये हर गली, हर नुक्कड़ पे दिखाई दे जाती थीं लेकिन यहाँ बात कुछ और थी।

दिल्ली की सुन्दरता थोड़ी बनावटी होती है और अभी मेरे सामने बिल्कुल प्राकृतिक और शुद्ध देसी सुन्दरता की झलक थी।

मेरा एक मित्र है जो बिहार के इसी प्रदेश का रहने वाला है और उसने कई बार बताया था कि इस इलाके की सुन्दरता हर जगह से भिन्न है और मैं वो आज महसूस भी कर रहा था।

रेणुका जी और वन्दना दोनों माँ बेटियाँ बिल्कुल दो सहेलियों की तरह एक दूसरे से बर्ताव कर रही थीं और दोनों ही बिल्कुल चुलबुली सी थीं।

कुल मिला कर वो शाम बहुत ही शानदार रही और उन सबसे विदा लेकर मैं वापस अपने कमरे पर आ गया।

कमरे पर आकर मैं सोने की तैयारी करने लगा और अपनी आँखों में उन दो खूबसूरत चेहरे बसाये हुए सोने की कोशिश करने लगा।

यूँ तो मैंने कई खूबसूरत लड़कियों और औरतों के साथ वक़्त बिताया है लेकिन पता नहीं क्यूँ आज इन दो माँ बेटियों के चेहरे मेरी आँखों से ओझल ही नहीं हो रहे थे।
खुली आँखों में उनकी चमक और आँखें बंद करते ही उनकी मुस्कराहट।

बस मत पूछिए की मेरा क्या हाल था, करवट बदलते बदलते रात कट गई।

सुबह आँख खुली तो काफी देर हो गई थी।
मैं झटपट उठा और बाहर का दरवाज़ा खोला क्यूंकि दूध वाले का वक़्त था… लेकिन जब घड़ी पर नज़र गई तो मायूसी छा गई क्यूंकि काफी देर हो चुकी थी और शायद दूध वाला बिना दूध दिए वापस चला गया था।

मैं वापस मुड़ा और अन्दर जाने लगा तभी किसी ने मुझे आवाज़ लगाई… 'समीर जी…ओ समीर जी…'

मैंने मुड़कर देखा तो रेणुका भाभी हाथ हिलाकर मेरी तरफ ही इशारा कर रही थीं।

उनको देखते ही मेरे चेहरे पे छाई मायूसी गायब हो गई और मैंने मुस्कुरा कर उन्हें नमस्ते की।

रेणुका जी ने मुझे ठहरने का इशारा किया और वापस अपने घर में चली गईं।

मैं कुछ समझ पाता, इससे पहले वो अपने घर से बाहर निकलीं, उनके हाथों में एक बड़ा सा पतीला था।

मेरी नज़र पहले तो पतीले पे गई फिर बरबस ही पतीले से हटकर उनके पूरे शरीर पे चली

गई।

उन्होंने लाल रंग की एक मस्त सी गाउननुमा ड्रेस पहन रखी थी जो उनकी सुन्दरता पे चार चाँद लगा रही थी।

वैसे ही खुले बालों में वो मुस्कुराती हुई अपनी कमर मटकती हुई धीरे धीरे मेरी तरफ बढ़ने लगीं।

'आप क्या रोज़ इतनी देर तक सोते रहते हैं... आपका दूध वाला आया था और कई बार आपको जगाने की कोशिश करी, लेकिन जब आप नहीं जागे तो ये दूध हमारे यहाँ देकर चला गया...' भाभी ने मुस्कुराते हुए शिकायत भरे लहजे में कहा।

'अरे नहीं भाभी जी... दरअसल कल रात को काफी देर हो गई थी सोते सोते, इस लिए सुबह जल्दी उठ नहीं पाया।' मैंने मासूमियत से जवाब दिया।

'क्यूँ कल रात को कोई भूत देख लिया था क्या... जो डर कर सो नहीं पा रहे थे आप ?' भाभी ने खिलखिलाकर हंसते हुए मजाक किया।

मैंने भी मौके पे चौका मारा और कहा- भूत नहीं भाभी, बल्कि कुछ ज्यादा ही खूबसूरत भूतनी देख ली थी इसलिए उसको याद करते करते जगता रहा।

'अच्छा जी... जरा संभल कर रहिएगा यहाँ की भूतनियों से... एक बार पकड़ लें तो फिर कितनी भी कोशिश कर लो, जाती ही नहीं...' भाभी ने बड़े ही मादक अंदाज़ में मेरी आँखों में अपनी चंचल आँखों से इशारे करते हुए चुटकी ली।

'अजी अगर इतनी खूबसूरत भूतनी हो तो कोई भला क्यूँ भागना चाहेगा, हम तो बस उससे चिपक कर ही रहेंगे।' मैंने भी उनकी आँखों में झांकते हुए शरारत भरे अंदाज़ में कहा।

‘बड़े छुपे हुए रुस्तम हो आप… हमारी खूब ज़मेगी, लगता है।’ भाभी ने इस बार मुझे आँख मार दी।

मैं समझ गया कि सच में हमारी खूब जमने वाली है क्यूंकि कल रात जब मैंने उनके पति अरविन्द जी को देखा था तभी समझ में आ गया था कि शायद कहीं न कहीं उनकी बढ़ती उम्र की वजह से भाभी की हसरतों का कोई कोना खाली रह जाता होगा और अभी उनकी इस हरकत और इन बातों ने मुझे यकीन दिला दिया था कि जो कमी पिछले तीन महीनों से परेशान कर रही थी, वो अब पूरी होने वाली है।

‘फिलहाल कोई बर्तन ले आइये और यह दूध ले लीजिये…’ भाभी ने मेरा ध्यान दूध की तरफ खींचा।

मगर मैं ठहरा कमीना और मैंने भाभी के नेचुरल दूध की तरफ देखना शुरू कर दिया।

रात को साड़ी में छिपे इन बड़े बड़े दूध कलश को उनके गाउन के ऊपर से अब मैं सही ढंग से देख पा रहा था।
बिल्कुल परफेक्ट साइज़ की चूचियाँ थीं वो।
मेरे अंदाज़े से 34 की रही होंगी जो कि मेरी फेवरेट साइज़ थी, न ज्यादा छोटी न ज्यादा बड़ी…

मुझे अपनी चूचियों की तरफ घूरता देख कर भाभी ने मेरी आँखों में देखा और अपनी भौहें उठा कर बिना कुछ कहे ऐसा इशारा किया मनो पूछ रहीं हो कि क्या हुआ।

मैंने मुस्कुराकर उन्हें अपना सर हिलाकर ‘कुछ नहीं’ का इशारा किया और अपने घर में घुस गया और दूध का बर्तन ढूंढने लगा।

सच कहूँ तो उनसे बातें करके मेरे लंड महराज ने अपना सर उठा लिया था और उनकी

चूचियों के एहसास ने उसे और हवा दे दी थी।

मैं रसोई में एक हाथ से अपने बरमुडे के ऊपर से अपने खड़े लंड को दबा कर बिठाने की कोशिश करने लगा और एक हाथ से बर्तन ढूंढने लगा।

'क्या हुआ समीर जी… बर्तन नहीं मिल रहा या फिर से भूतनी दिख गई ?' रेणुका जी यह कहते हुए घर में घुस पड़ीं और सीधे रसोई की तरफ आ गईं।

मेरा हाथ अब भी वहीं था यानि मेरे लंड पे!

भाभी की आवाज सुनकर मैं हड़बड़ा गया और जल्दी से अपना हाथ हटा लिया लेकिन तब तक शायद उन्होंने मुझे लंड दबाते हुए देख लिया।
मैं झेंप सा गया और जल्दी से जल्दी दूध का बर्तन ढूंढने लगा।

'हटो मैं देखती हूँ…' भाभी ने मुस्कुराते हुए मुझे हटने को कहा और दूध का पतीला एक किनारे रख कर अपने दोनों हाथों से बर्तनों के बीच दूध का बर्तन ढूंढने लगी।

रैक के ऊपर के सारे बर्तन गंदे पड़े थे इसलिए वो झुक गईं और नीचे की तरफ ढूंढने लगीं।

'उफ्फ्फ़…' बस इसी की कमी थी।
रेणुका जी ठीक मेरे सामने इस तरह झुकी थीं मनो अपनी गोल गोल और विशाल चूतड़ों को मेरी तरफ दिखा दिखा कर मुझे चोदने का निमंत्रण दे रहीं हों।

अब मुझ जैसा लड़का जिसने दिल्ली की कई लड़कियों और औरतों को इसी मुद्रा में रात रात भर चोद चुका हो उसकी हालत क्या हो रही होगी, यह तो आप समझ ही सकते हैं।
ऊपर से चूत के दर्शन किये हुए तीन महीने हो गए थे।
मेरा हाल यह था कि मेरा लंड अब मेरे बरमुडे की दीवार को तोड़ने के लिए तड़प रहा था

और मैं यह फैसला नहीं कर पा रहा था कि क्या करूँ... अभी बस कल रात को ही तो हमारी मुलाकात हुई है और वो भी बड़ी शालीनता भरी। तो क्या मैं इतनी जल्दी मचा कर आखिरी मंजिल तक पहुँच जाऊँ या अभी थोड़ा सा सब्र कर लूँ और पूरी तरह से यकीन हो जाने पर कि उनके मन में भी कुछ है, तभी आगे बढ़ूँ...
कहानी जारी रहेगी।